अल्प-बहुत्व

Presentation Developed By:
Smt Sarika Vikas Chhabra

पुंकोहस्स य उदए, चडपडिदेऽपुव्वदो अप्पुव्वो त्ति ।
एदिस्से अद्धाये, अप्पाबहुगं तु वोच्छामि ॥365॥

- अन्वयार्थ - (पुंकोहस्स य उदए) पुरुषवेद और क्रोध के उदय से (चडपडिदे) श्रेणी चढ़कर गिरनेवाले जीव का (अपुव्वदो अप्पुव्वो त्ति) आरोहक अपूर्वकरण से अवरोहक अपूर्वकरण पर्यन्त (एदिस्से अद्धाये) इस काल में (अप्पाबहुगं तु) अल्प-बहुत्व (वोच्छामि) मैं कहता हूँ ॥365॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व कथन की प्रतिज्ञा

पुरुषवेद और क्रोध के उदय से

श्रेणी चढ़ने वाले के

आरोहक अपूर्वकरण के प्रथम समय से

अवरोहक अपूर्वकरण के अंतिम समय तक के काल में संभव

अल्प-बहुत्व पदों को कहूंगा ।

अल्प-बहुत्व किनका?

- स्थितिकांडक का उत्कीरण काल, घात की स्थिति, अनुभाग कांडक घात का काल
- स्थिति-बंध अपसरण का काल, स्थिति-बंधापसरण का आयाम
- चढते समय और उतरते समय के काल
  - गुणश्रेणी आयाम के काल
  - प्रथम स्थिति, उपशमन काल
  - स्थिति-बंध
  - स्थिति-सत्त्व
- अंतरायाम, आबाधा काल, वेदक काल आदि

www.JainKosh.org

अवरादो वरमहियं, रसखंडुक्कीरणस्स अद्धाणं । संखगुणं अवरट्ठिदि-खंडस्सुक्कीरणो कालो ॥366॥

- अन्वयार्थ - (रसखंडुक्कीरणस्स अवरादो वरं अद्धाणं अहियं) अनुभागकाण्डकोत्करण के जघन्य काल की अपेक्षा उत्कृष्ट काल विशेष अधिक है।
- उससे (अवरट्ठिदि-खंडस्सुक्कीरणो कालो संखगुणं) जघन्य स्थितिकांडकोत्करण काल संख्यातगुणा है ॥366॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (1-2)

1) जघन्य अनुभागकांडक-उत्कीरण काल सबसे स्तोक है । २१

- अ) ज्ञानावरणादि 6 कर्मों का जघन्य अनुभागकांडक-उत्कीरण काल आरोहक के सूक्ष्म-सांपराय के अंतिम अनुभागकांडक का काल है ।
- ब) मोहनीय का सबसे अंतिम अनुभागकांडकघात अंतरकरण करते समय अंतिम घात में होता है । उसका काल मोहनीय की अपेक्षा जघन्य अनुभागकांडक-उत्कीरण काल है ।

2) इससे उत्कृष्ट अनुभागकांडक-उत्कीरण काल विशेष अधिक है ।

- यह अपूर्वकरण के प्रथम अनुभागघात का काल है । २१+

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (3)

3) इससे जघन्य स्थितिकांडक-उत्कीरण काल और जघन्य स्थिति-बंध काल संख्यात गुणा है । २९ + | ४

अ) ज्ञानावरणादि 6 कर्मों के यह दोनों जघन्य काल सूक्ष्म-सांपराय के अंतिम स्थिति-बंध और अंतिम स्थितिकांडक घात में प्राप्त होते हैं ।

ब) मोहनीय का जघन्य स्थिति-बंध का काल अनिवृत्तिकरण के अंतिम स्थिति-बंध में प्राप्त होता है ।

नोट: मोहनीय का जघन्य स्थिति उत्कीरण काल अंतरकरण के काल में प्राप्त होता है । मोहनीय का जघन्य स्थिति-बंध और स्थिति-उत्कीरण काल समान नहीं है क्योंकि वे भिन्न स्थानों पर प्राप्त होते हैं ।

www.JainKosh.org

पडणजहण्णट्ठिदिबंधद्धा तह अंतरस्स करणद्धा ।
जेट्ठट्ठिदिबंधट्ठिदि-उक्कीरद्धा य अहियकमा ॥367॥

- अन्वयार्थ - जघन्य स्थितिकाण्डकोत्कीरणकाल से (पडणजहण्णट्ठिदिबंधद्धा) गिरनेवाले का जघन्य स्थिति-बंधकाल (तह) उसी प्रकार (अंतरस्स करणद्धा) अंतरकरणकाल (य) और (जेट्ठट्ठिदिबंधट्ठिदिउक्कीरद्धा) उत्कृष्ट स्थिति-बंधकाल और उत्कृष्ट स्थितिकाण्डकोत्कीरणकाल (अहियकमा) क्रम से अधिक हैं ॥367॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (4-6)

4) इससे अवतारक का जघन्य स्थिति-बंध काल विशेष अधिक है । २१ + | ४+

- अ) ज्ञानावरणादि का यह काल अवरोहक सूक्ष्म-सांपराय के प्रथम स्थिति-बंध में होता है ।
- ब) मोहनीय का यह काल अवरोहक अनिवृत्तिकरण के प्रथम स्थिति-बंध में होता है ।

5) इससे अंतरकरण का काल विशेष अधिक है । २१ + | ४++

- क्योंकि यह मध्यम स्थितिकांडक के काल प्रमाण है ।

6) इससे उत्कृष्ट स्थिति-बंध और उत्कृष्ट स्थितिकांडक-उत्कीरण काल विशेष अधिक है ।

- यह काल आरोहक अपूर्वकरण के प्रथम स्थिति-बंध में होता है । २१+ | ४+++

www.JainKosh.org

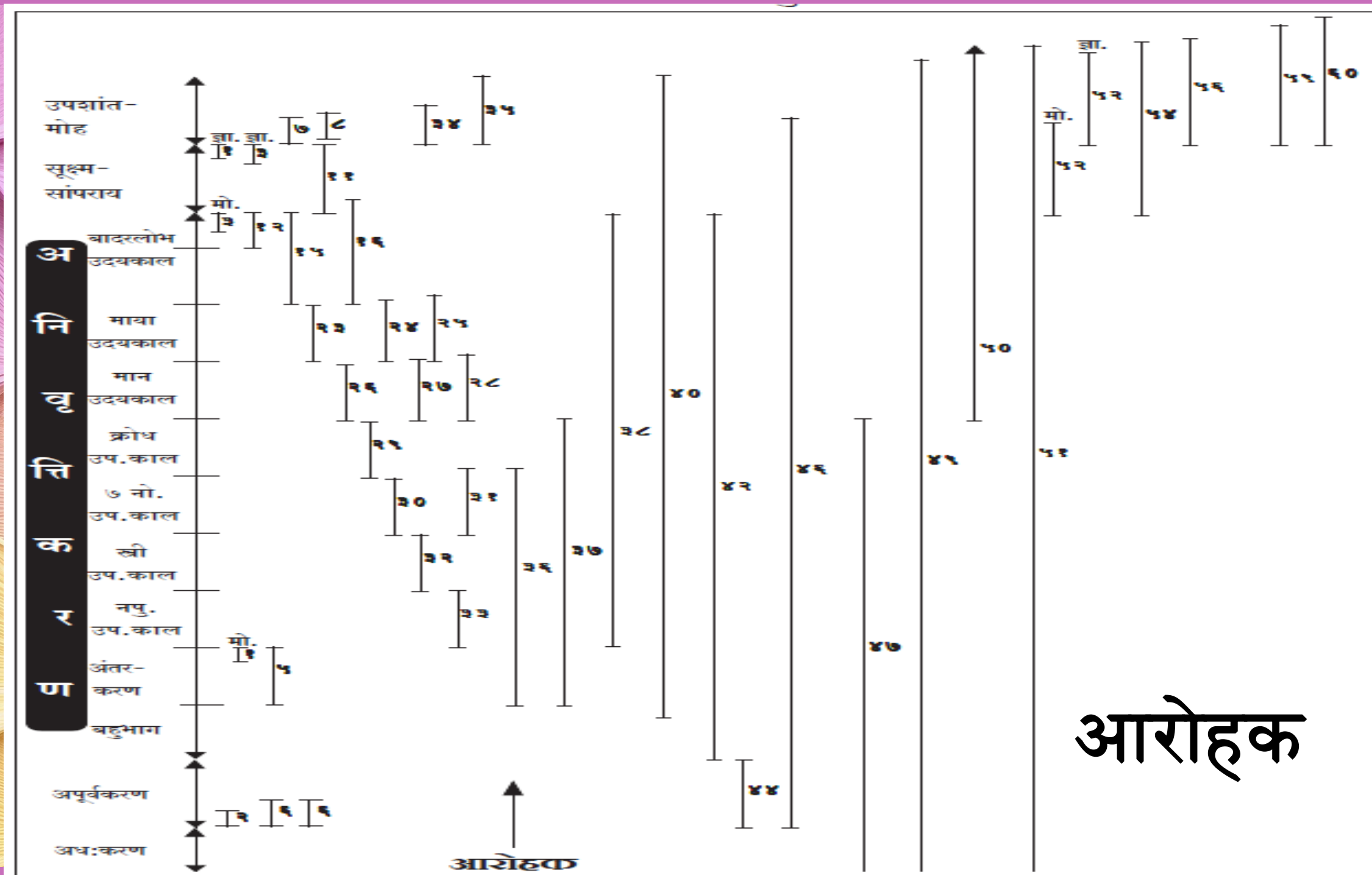
उपशांत-मोह
सूक्ष्म-सांपराय
अनिवृत्तिकरण
बादरलोभ उदयकाल
माया उदयकाल
मान उदयकाल
क्रोध उप.काल
७ नो. उप.काल
स्त्री उप.काल
नपु. उप.काल
अंतर-करण
बहुभाग
अपूर्वकरण
अध:करण
ज्ञा.
मो.
आरोहक

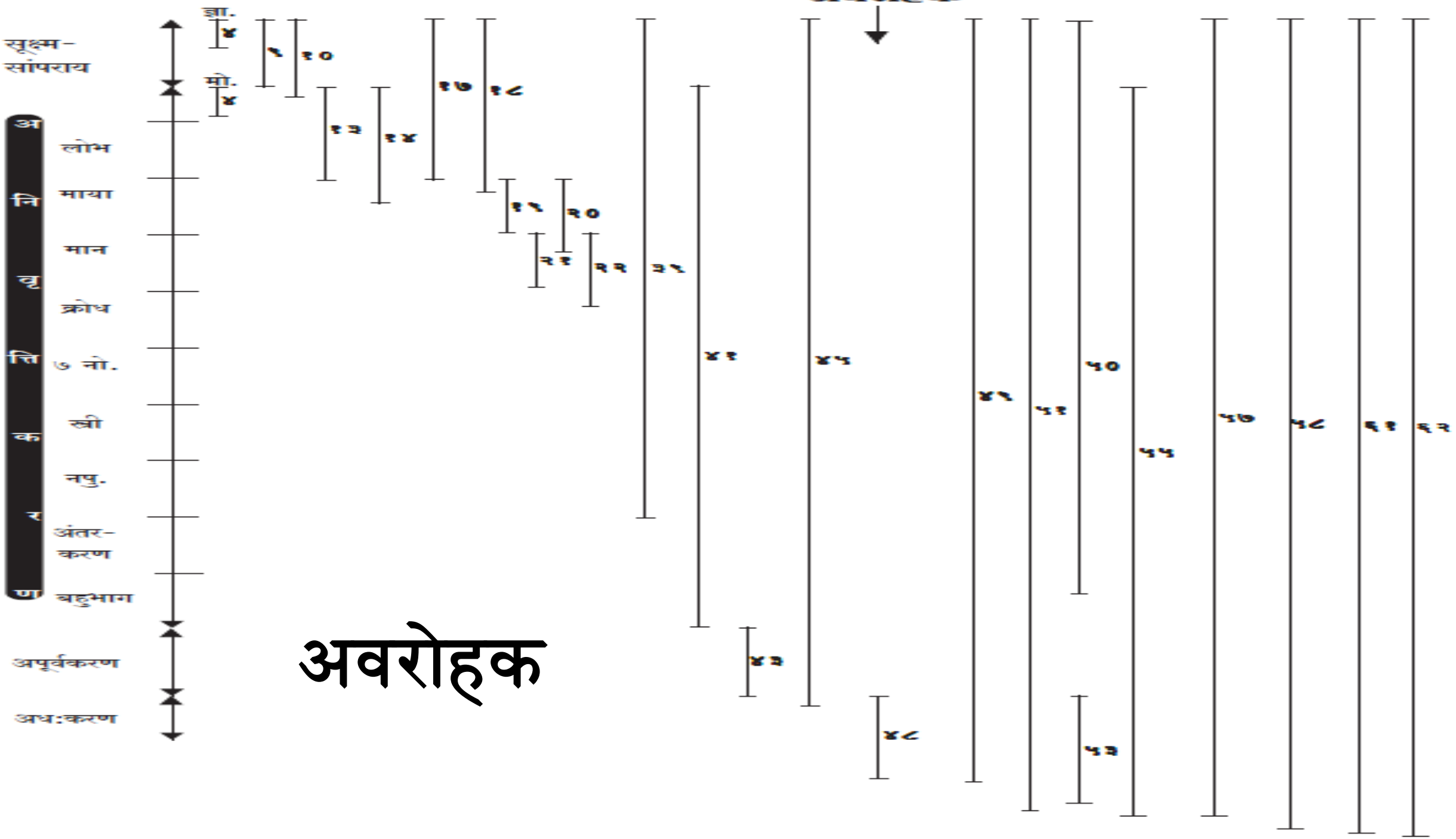

सूक्ष्म-सांपराय
ज्ञा.
मो.
अनिवृत्तिकरण
लोभ
माया
मान
क्रोध
७ नो.
स्त्री
नपु.
अंतर-करण
बहुभाग
अपूर्वकरण
अध:करण
अवरोहक

सुहुमंतिमगुणसेढी, उवसंतकसायगस्स गुणसेढी ।
पडिवदसुहुमद्धा वि य, तिण्णि वि संखेज्जगुणिदकमा ॥368॥

- अन्वयार्थ- उससे (सुहुमंतिमगुणसेढी) सूक्ष्म-सांपराय के अंतिम समय में होने वाला गुणश्रेणिआयाम,
- (उवसंतकसायगस्स गुणसेढी) उपशान्त कषाय का गुणश्रेणिआयाम (य) और
- (पडिवदसुहुमद्धा वि) गिरनेवाले का सूक्ष्म-सांपराय काल
- (तिण्णि वि) ये तीनों भी (संखेज्जगुणिदकमा) क्रम से संख्यातगुणित हैं ॥368॥

www.JainKosh.org

7) इससे आरोहक सूक्ष्म-सांपराय के अंतिम समय में होने वाला गलितावशेष गुणश्रेणि आयाम संख्यात गुणा है। 2 २+ | ४+++| ४

8) इससे उपशांतकषाय के प्रथम समय में प्रारंभ किया गया गुणश्रेणि आयाम संख्यात गुणा है। 2 २+ | ४+++ | ४ ४

- क्योंकि सूक्ष्म-सांपराय के अंतिम समय शेष रहा आयाम उपशांतकषाय का संख्यातवां भाग है। उपशांतकषाय में रचित गुणश्रेणि का आयाम इससे संख्यात गुणा है।

9) इससे अवरोहक के सूक्ष्म-सांपराय का काल संख्यात गुणा है।
2 २+ | ४+++| ४ ४ ४

www.JainKosh.org

तग्गुणसेढी अहिया, चडसुहुमो किट्टिउवसमद्धा य ।
सुहुमस्स य पढमठिदी, तिण्णि वि सरिसा विसेसहिया॥369॥

- अन्वयार्थ - उससे (तग्गुणसेढी) उतरनेवाले सूक्ष्म-सांपराय का गुणश्रेणि-आयाम (अहिया) अधिक है।
- उससे (चडसुहुमो) चढ़नेवाले का सूक्ष्म-सांपराय का काल (य) और (किट्टिउवसमद्धा) कृष्टियों का उपशमनकाल (य) और (सुहुमस्स पढमठिदी) सूक्ष्म-सांपराय की प्रथम स्थिति (तिण्णि वि) तीनों काल (सरिसा) परस्पर समान होकर (पूर्वपद से) (विसेसहिया) विशेष अधिक हैं ॥369॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (10-11)

10) इससे अवरोहक सूक्ष्म-सांपराय का संज्वलन लोभ का गुणश्रेणी आयाम विशेष अधिक (एक आवली अधिक) है । 2 ૨+

11) इससे आरोहक सूक्ष्म-सांपराय काल, कृष्टियों का उपशमन काल और सूक्ष्मलोभ की प्रथम स्थिति – ये परस्पर समान होकर विशेष अधिक हैं । 2 ૨ ++

किट्टीकरणद्धहिया, पडबादरलोभवेदगद्धा हु ।
संखगुणा तस्सेव य, तिलोहगुणसेढिणिक्खेओ ॥370॥

- अन्वयार्थ - इससे (किट्टीकरणद्धहिया) कृष्टिकरण काल अधिक है।
- उससे (पडबादरलोभवेदगद्धा) गिरनेवाले बादर सांपराय का बादरलोभ वेदककाल (संखगुणा) संख्यातगुणा है।
- उससे (तस्सेव य) उसका ही (तिलोहगुणसेढिणिक्खेओ) तीन लोभ का गुणश्रेणि निक्षेप विशेष अधिक है। (यहाँ से आगे 374 गाथा का अधिक शब्द लगाना चाहिए) ॥370॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (12-14)

12) इससे कृष्टिकरण काल विशेष अधिक है ।

- क्योंकि यह बादर लोभ का अर्ध भाग से कुछ कम काल है । यह लोभ वेदककाल के तीन भागों में से दूसरा भाग है ।

13) इससे अवरोहक बादरसांपराय के लोभवेदक काल संख्यात गुणा है ।

14) इससे अवरोहक बादर सांपराय के 3 लोभ का गुणश्रेणि निक्षेप एक आवली से विशेष अधिक है ।

चडबादरलोहस्स य, वेदगकालो य तस्स पढमठिदी ।
पडलोहवेदगद्धा, तस्सेव य लोहपढमठिदी ॥371॥

- अन्वयार्थ - (चडबादरलोहस्स य वेदगकालो) उससे चढ़ने वाले बादरलोभ का वेदककाल अधिक है।
- उससे (य तस्स पढमठिदी) उसकी ही प्रथम स्थिति अधिक है।
- उससे (पडलोहवेदगद्धा) गिरने वाले का पूर्ण लोभवेदककाल विशेष अधिक है।
- उससे (तस्सेव य लोहपढमठिदी) उसकी ही लोभ की प्रथम स्थिति विशेष अधिक है ॥371॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (15-18)

15) इससे आरोहक अनिवृत्तिकरण के बादर लोभ का वेदक काल अंतर्मुहूर्त से अधिक है ।

16) इससे आरोहक अनिवृत्तिकरण के बादर लोभ की प्रथम स्थिति एक आवली से अधिक है ।

17) इससे अवरोहक के लोभ वेदककाल विशेष अधिक है ।

- कितना अधिक है ? (अवरोहक का सूक्ष्म-सांपराय काल – 1 आवली) प्रमाण अधिक है ।

18) इससे अवरोहक के ही लोभ की प्रथम स्थिति विशेष अधिक है ।

तम्मायावेदद्धा, पडिवडछण्हंपि खित्तगुणसेढी ।
तम्माणवेदगद्धा, तस्स णवण्हं पि गुणसेढी ॥372॥

- अन्वयार्थ - उससे (तम्मायावेदद्धा) उसका (गिरनेवाले का) माया वेदककाल विशेष अधिक है।
- उससे (पडिवडछण्हंपि खित्तगुणसेढी) गिरनेवाले का छह कषायों का गुणश्रेणि निक्षेप विशेष अधिक है।
- उससे (तम्माणवेदगद्धा) उसका (गिरनेवाले का) मानवेदककाल विशेष अधिक है।
- उससे (तस्स णवण्हं पि गुणसेढी) उसकी नोकषायों की गुणश्रेणि विशेष अधिक है ॥372॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (19-22)

19) इससे अवरोहक का माया वेदककाल अंतर्मुहूर्त से अधिक है ।

20) इससे अवरोहक का 6 कषायों का गुणश्रेणि आयाम आवली मात्र से अधिक है ।

21) इससे अवरोहक का मानवेदककाल अंतर्मुहूर्त से अधिक है ।

22) इससे अवरोहक का 9 कषायों का गुणश्रेणि आयाम आवली मात्र से अधिक है ।

चडमायावेदद्धा, पढमट्ठिदि मायउवसमद्धा य ।
चलमाणवेदगद्धा, पढमट्ठिदि माणउवसमद्धा य ॥373॥

- अन्वयार्थ- उससे (चडमायावेदद्धा) चढ़ने वाले का माया वेदककाल, (पढमट्ठिदि) माया की प्रथम स्थिति, (मायउवसमद्धा य) माया का उपशमनकाल
- (चलमाणवेदगद्धा) चढ़ने वाले का मान वेदककाल, (पढमट्ठिदि) मान की प्रथम स्थिति (य) और (माणउवसमद्धा) मान का उपशमनकाल – ये छह पद एक की अपेक्षा एक अधिक हैं ॥373॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (23-28)

23) इससे आरोहक का माया वेदककाल अंतर्मुहूर्त से विशेष अधिक है ।

24) इससे आरोहक की माया की प्रथम स्थिति एक आवली से विशेष अधिक है ।

25) इससे आरोहक का माया का उपशमन काल (आवली–1 से) विशेष अधिक है ।

26) इससे आरोहक का मानवेदक काल विशेष अधिक है ।

27) इससे आरोहक की मान की प्रथम स्थिति विशेष अधिक है ।

28) इससे आरोहक का मान का उपशमन काल विशेष अधिक है ।

www.JainKosh.org

कोहोवसामणद्धा, छप्पुरिसित्थीणउंसयाणं च ।
खुद्दभवग्गहणं च य, अहियकमा एक्कवीसपदा ॥374॥

- अन्वयार्थ - उससे (कोहोवसामणद्धा) क्रोध का उपशमनकाल,
- (छप्पुरिसित्थीणउंसयाणं च) छह कषायों का उपशमन काल, पुरुषवेद का उपशमन काल, स्त्रीवेद का उपशमन काल, नपुंसकवेद का उपशमनकाल (च य) और (खुद्दभवग्गहणं) क्षुद्रभवग्रहण – ये छह पद (अहियकमा) क्रम से अधिक हैं।
- (एक्कवीसपदा) पूर्व के कुल इक्कीस पद क्रम से अधिक हैं। ॥374॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (29-34)

29) इससे क्रोध का उपशमन काल अंतर्मुहूर्त से अधिक है ।

30) इससे 6 कषायों का उपशमन काल अंतर्मुहूर्त से अधिक है ।

31) इससे पुरुषवेद का उपशमन काल अंतर्मुहूर्त (2 आवली–1) से अधिक है ।

32) इससे स्त्रीवेद का उपशमन काल अंतर्मुहूर्त से अधिक है ।

33) इससे नपुंसकवेद का उपशमन काल अंतर्मुहूर्त से अधिक है ।

34) इससे क्षुद्रभवग्रहण काल विशेष अधिक है ।

- यह श्वास के अठारहवें भाग प्रमाण है ।

श्वास

48 Minutes में 3773 श्वास होते हैं,

तो 1 Minute में 78.60 श्वास होते हैं ।

- (3773 / 48) = 78.60

78.6 श्वास 60 सेकंड में होते हैं,

तो 1 श्वास = 0.76 seconds में होता है!!

- (60 / 78.60) = 0.76

लब्ध्यपर्याप्तक जीव का 0.76 seconds में 18 बार जीवन-मरण हो जाता है!!

www.JainKosh.org

उवसंतद्धा दुगुणा, तत्तो पुरिसस्स कोहपढमठिदी ।
मोहोवसामणद्धा, तिण्णि वि अहियक्कमा होंति ॥375॥

- अन्वयार्थ - (तत्तो) उससे (उवसंतद्धा) उपशान्त कषाय का काल (दुगुणा) दुगुना है।
- उससे (पुरिसस्स कोहपढमठिदी) पुरुषवेद की प्रथम स्थिति, क्रोध की प्रथम स्थिति और (मोहोवसामणद्धा) मोह का उपशमनकाल (तिण्णि वि) ये तीनों भी (अहियक्कमा) क्रम से अधिक (होंति) हैं ॥375॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (35-38)

35) इससे उपशांतकषाय का काल दुगुणा है ।

36) इससे पुरुषवेद की प्रथम स्थिति विशेष अधिक है ।

37) इससे संज्वलन क्रोध प्रथम स्थिति विशेष अधिक है । ($\frac{\text{पूर्व के काल}}{3}$ से कुछ कम से अधिक है ।)

38) इससे मोहनीय का उपशमन काल विशेष अधिक है । (नपुंसकवेद से लेकर सूक्ष्म लोभ तक का उपशमन काल = मोहनीय का उपशमन काल)

पडणस्स असंखाणं, समयपबद्धाणुदीरणाकालो ।
संखगुणो चडणस्स य, तक्कालो होदि अहियो य ॥376॥

- अन्वयार्थ- इससे (पडणस्स) गिरने वाले का (असंखाणं समयपबद्धाणुदीरणाकालो) असंख्यात समयप्रबद्धों की उदीरणा होने का काल (संखगुणो) संख्यातगुणा है ।
- (य) और उससे (चडणस्स तक्कालो) चढ़ने वाले का वह काल (असंख्यात समयप्रबद्धों का उदीरणा काल) (अहियो होदि) अधिक है ॥376॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (39-40)

39) गिरने वाले का असंख्यात समयप्रबद्धों की उदीरणा का काल संख्यात गुणा है । क्योंकि अंतरकरण रूप स्थान से नीचे देशघाति करण को भी नष्ट करके, संख्यात हजार स्थिति-बंध जाने पर असंख्यात समयप्रबद्ध की उदीरणा प्रारंभ होती है । इसलिये यह काल; पूर्व काल से संख्यात गुणा हो जाता है ।

40) इससे आरोहक के असंख्यात समयप्रबद्धों की उदीरणा का काल विशेष अधिक है । आरोहक की अपेक्षा अवरोहक के यह काल जल्दी प्राप्त हो जाता है ।

www.JainKosh.org

पडणाणियट्टियद्धा, संखगुणा चडणगा विसेसहिया ।
पडमाणा पुव्वद्धा, संखगुणा चडणगा अहिया ॥377॥

- अन्वयार्थ- उससे (पडणाणियट्टियद्धा) गिरने वाले अनिवृत्तिकरण का काल (संखगुणा) संख्यातगुणा है।
- उससे (चडणगा) चढ़ने वाले का अनिवृत्तिकरण का काल (विसेसहिया) विशेष अधिक है।
- उससे (पडमाणा पुव्वद्धा) गिरने वाले अपूर्वकरण का काल (संखगुणा) संख्यातगुणा है।
- उससे (चडणगा) चढ़नेवाले का अपूर्वकरण का काल (अहिया) विशेष अधिक है ॥377॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (41-44)

41) इससे अवरोहक का अनिवृत्तिकरण का काल संख्यात गुणा है ।

42) इससे आरोहक का अनिवृत्तिकरण का काल विशेष अधिक है ।

43) इससे अवरोहक का अपूर्वकरण का काल संख्यात गुणा है ।

44) इससे आरोहक का अपूर्वकरण का काल विशेष अधिक है ।

www.JainKosn.org

पडिवडवरगुणसेढी, चडमाणापुव्वपढमगुणसेढी ।
अहियकमा उवसामग-कोहस्स य वेदगद्धा हु ॥378॥

- अन्वयार्थ- उससे (पडिवडवरगुणसेढी) गिरने वाले का उत्कृष्ट गुणश्रेणिआयाम और (चढमाणापुव्वपढमगुणसेढी) चढ़ने वाले का अपूर्वकरण के प्रथम समय का गुणश्रेणि आयाम (अहियकमा) क्रम से अधिक हैं ।
- (य) और (उवसामगकोहस्स वेदगद्धा हु) उपशामक के क्रोध का वेदककाल संख्यातगुणा है । (381 गाथा का संख्यातगुणित शब्द यहाँ और आगे भी लगावे) ॥378॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (45-47)

45) इससे अवरोहक सूक्ष्म-सांपराय के प्रथम समय में प्रारंभ की गयी ज्ञानावरणादि कर्मों की गलितावशेष गुणश्रेणी का आयाम अंतर्मुहूर्त से अधिक है ।

46) इससे आरोहक के अपूर्वकरण के प्रथम समय की गयी गुणश्रेणी का आयाम विशेष अधिक है ।

47) आरोहक का क्रोधवेदक काल संख्यात गुणा है । (अपूर्वकरण के पूर्व संख्यात गुणे अधःप्रवृत्तकरण काल में भी क्रोधोदय ही विद्यमान है । उसे गिनते हुए क्रोधवेदक काल संख्यात गुणा होता है ।)

www.JainKosh.org

संजदअधापवत्तग-गुणसेढी दंसणोवसंतद्धा ।
चारित्तंतरगठिदी, दंसणमोहंतरठिदीओ ॥379॥

- अन्वयार्थ - (संजदअधापवत्तग-गुणसेढी) स्वस्थान अप्रमत्तसंयत का अधःप्रवृत्तकरण में गुणश्रेणि आयाम,
- (दंसणोवसंतद्धा) दर्शनमोह का उपशान्त काल,
- (चारित्तंतरगठिदी) चारित्रमोह का अंतरायाम और
- (दंसणमोहंतरठिदीओ) दर्शनमोह की अन्तरस्थिति – ये चार पद एक की अपेक्षा एक संख्यातगुणे हैं ॥379॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (48-51)

48) इससे अवरोहक के स्वस्थान अप्रमत्तसंयत के प्रथम समय कृत गुणश्रेणि आयाम संख्यात गुणा है ।

49) इससे दर्शनमोह का उपशांत काल याने द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का काल संख्यात गुणा है ।

50) इससे चारित्रमोह का अंतरायाम संख्यात गुणा है ।

51) इससे दर्शनमोह का अंतरायाम संख्यात गुणा है ।

अवरा जेट्ठाबाहा, चडपडमोहस्स अवरठिदिबंधो ।
चडपडतिघादिअवर-ट्ठिदिबंधंतोमुहुत्तो य ॥380॥

- अन्वयार्थ- (अवरा जेट्ठाबाहा) जघन्य आबाधा, उत्कृष्ट आबाधा
- (चडपडमोहस्स अवरठिदिबंधो) चढ़ने वाले का मोह का जघन्य स्थिति-बंध, गिरने वाले का मोह का जघन्य स्थिति-बंध
- (चडपडतिघादिअवरट्ठिदिबंधंतोमुहुत्तो य) चढ़ने वाले का तीन घाति का जघन्य स्थितिबन्ध, गिरने वाले का तीन घाति का जघन्य स्थिति-बंध, (उत्कृष्ट) अन्तर्मुहूर्त – ये सातों पद एक की अपेक्षा एक संख्यातगुणे हैं ॥380॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (52-55)

52) इससे जघन्य आबाधा संख्यात गुणा है ।

- अ) ज्ञानावरणादि 6 कर्मों की जघन्य आबाधा सूक्ष्म-सांपराय के अंतिम बंध में प्राप्त होती है ।
- ब) मोहनीय की जघन्य आबाधा अनिवृत्तिकरण के

53) इससे उत्कृष्ट आबाधा संख्यात गुणा है।

- यह अवरोहक अपूर्वकरण के अंतिम स्थिति-बंध में प्राप्त होती है ।

54) इससे आरोहक के मोह का जघन्य स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

- यह अनिवृत्तिकरण के अंतिम स्थिति-बंध में प्राप्त होता है ।

55) इससे अवरोहक के मोह का जघन्य स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

- यह अनिवृत्तिकरण के प्रथम स्थिति-बंध में प्राप्त होता है ।

अल्प-बहुत्व (56-58)

56) इससे आरोहक का 3 घाति कर्मों का जघन्य स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

- आरोहक के ज्ञानावरणादि 6 कर्मों का जघन्य स्थिति-बंध सूक्ष्म-सांपराय के अंतिम स्थिति-बंध में होता है ।

57) इससे अवरोहक का 3 घाति कर्मों का जघन्य स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

- अवरोहक के ज्ञानावरणादि 6 कर्मों का जघन्य स्थिति-बंध सूक्ष्म-सांपराय के प्रथम स्थिति-बंध में होता है ।

58) इससे उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त संख्यात गुणा होता है । अर्थात् इस पद से पूर्व के सभी पद अंतर्मुहूर्त प्रमाण वाले हैं ।

चडमाणस्स य णामा-गोदजहण्णट्ठिदीण बंधो य ।
तेरसपदासु कमसो, संखेण य होंति गुणियकमा ॥381॥

- अन्वयार्थ- इससे (चडमाणस्स य णामागोदजहण्णट्ठिदीण बंधो य) चढ़नेवाले का नाम और गोत्र का जघन्य स्थितिबन्ध (संख्यातगुणा है) ।
- (तेरसपदासु कमसो संखेण य गुणियकमा होंति) 47 से 59 पर्यन्त तेरह पद क्रम से संख्यातगुणित हैं ॥381॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (59)

59) इससे आरोहक के नाम-गोत्र का जघन्य स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

- क्योंकि यह 16 मुहूर्त है ।

ये पूर्वोक्त 13 पद (क्रमांक 47 से 59 तक) संख्यात गुणा है ।

चडतदियअवरबंधं, पडणामागोद अवरठिदिबंधो ।
पडतदियस्स य अवरं, तिण्णि पदा होंति अहियकमा ॥382॥

- अन्वयार्थ- उससे (चडतदियअवरबंधं) चढ़ने वाले का तृतीय अर्थात् वेदनीय का जघन्य स्थितिबन्ध,
- उससे (पडणामागोद अवरठिदिबंधो) गिरने वाले का नाम और गोत्र का जघन्य स्थितिबन्ध,
- उससे (पडतदियस्स य) गिरने वाले का तृतीय अर्थात् वेदनीय का (अवरं) जघन्य स्थितिबन्ध (तिण्णि पदा) ये तीनों पद (अहियकमा) क्रम से अधिक (होंति) होते हैं ॥382॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (60-62)

60) इससे आरोहक का वेदनीय का जघन्य स्थिति-बंध विशेष अधिक है । यह 24 मुहूर्त प्रमाण है ।

61) अवरोहक का नाम-गोत्र का जघन्य स्थिति-बंध विशेष अधिक है । यह 32 मुहूर्त प्रमाण है ।

62) इससे अवरोहक का वेदनीय का जघन्य स्थिति-बंध विशेष अधिक है । यह 48 मुहूर्त प्रमाण है ।

www.JainKosh.org

चडमायमाणकोहो, मासादीदुगुण अवरठिदिबंधो ।
पडणे ताणं दुगुणं, सोलसवस्साणि चलणपुरिसस्स ॥383॥

- अन्वयार्थ- उससे (चडमायमाणकोहो अवरठिदिबंधो मासादीदुगुण) चढ़ने वाले का माया का जघन्य स्थितिबन्ध एक माह, मान का जघन्य स्थितिबन्ध दो माह, क्रोध का जघन्य स्थितिबन्ध चार माह – इस प्रकार दुगुणा-दुगुणा है।
- उससे (पडणे ताणं दुगुणं) गिरते समय उसका दुगुणा है।
- (चलणपुरिसस्स सोलसवस्साणि) चढ़ने वाले का पुरुषवेद का जघन्य स्थितिबन्ध सोलह वर्षमात्र है ॥383॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (63-69)

63) आरोहक के संज्वलन माया का जघन्य स्थिति-बंध संख्यात गुणा है । (1 मास)

64-65) इससे आरोहक के संज्वलन मान का तथा अवरोहक के संज्वलन माया का जघन्य स्थिति-बंध संख्यात गुणा है । (2 मास)

66-67) इससे आरोहक के संज्वलन क्रोध का तथा अवरोहक का संज्वलन मान का जघन्य स्थिति-बंध संख्यात गुणा है । (4 मास)

68) इससे अवरोहक के संज्वलन क्रोध का जघन्य स्थिति-बंध संख्यात गुणा है । (8 मास)

69) इससे आरोहक के पुरुषवेद का जघन्य स्थिति-बंध संख्यात गुणा है । (16 वर्ष)

www.JainKosh.org

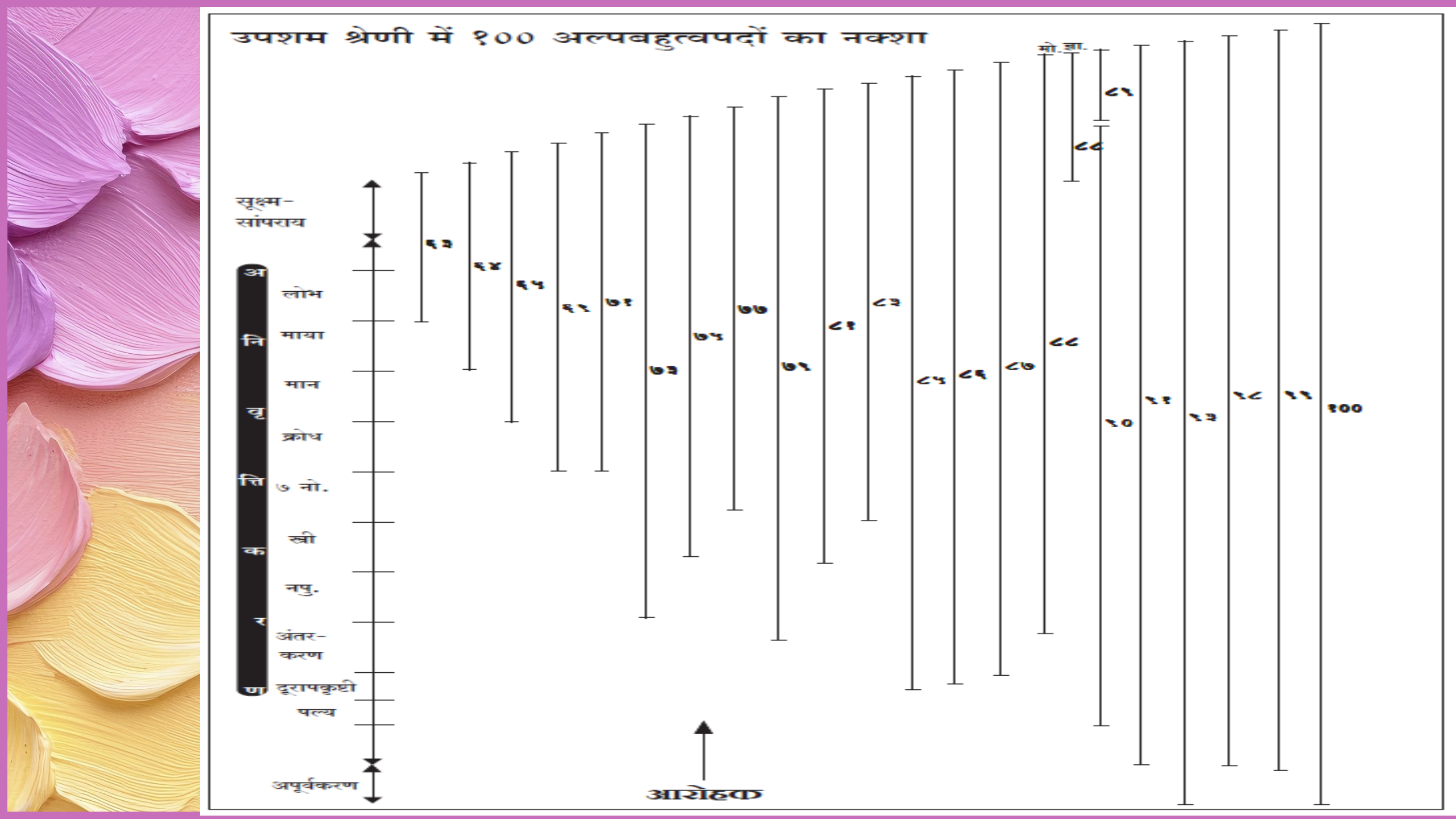

उपशम श्रेणी में १०० अल्पबहुत्वपदों का नक्शा

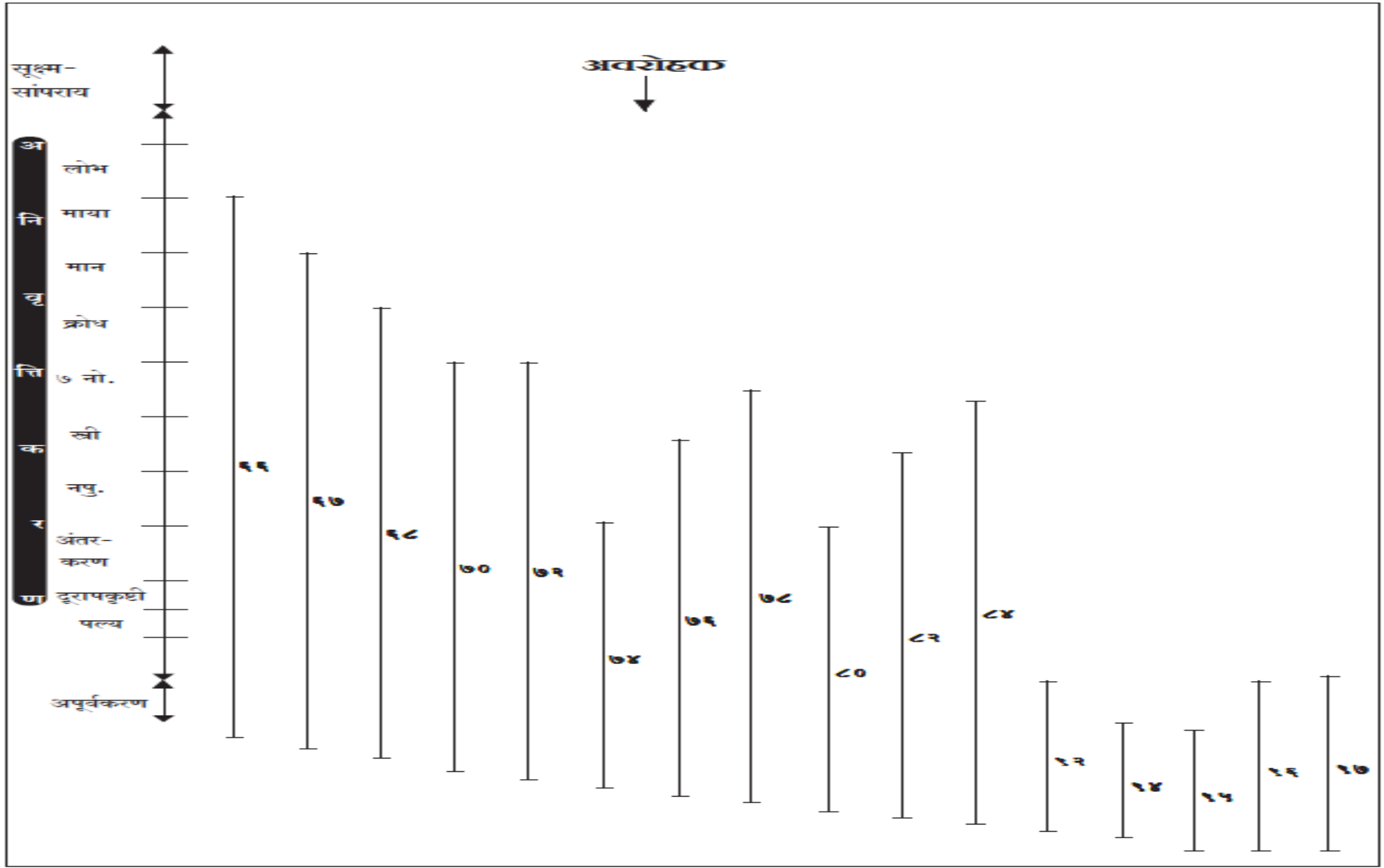
अवरोहक
सूक्ष्म-
सांपराय
अनिवृत्तिकरण
लोभ
माया
मान
क्रोध
७ नो.
स्त्री
नपु.
अंतर-
करण
दूरापकृष्टी
पल्य
अपूर्वकरण
६६
६७
६८
७०
७२
७४
७६
७८
८०
८२
८४
१३
१४
१५
१६
१७

पडणस्स तस्स दुगुणं, संजलणाणं तु तत्थ दुट्ठाणे ।
बत्तीसं चउसट्ठी, वस्सपमाणेण ठिदिबंधो ॥384॥

- अन्वयार्थ- उससे (पडणस्स तस्स दुगुणं) गिरने वाले का उसका (पुरुषवेद का) जघन्य स्थितिबन्ध दुगुणा (बत्तीस वर्षमात्र) है । (तत्थ दुट्ठाणे संजलणाणं ठिदिबंधो बत्तीसं चउसट्ठी वस्सपमाणेण) वहाँ पुरुषवेद के दोनों समय में संज्वलन कषायों का स्थिति-बंध क्रम से बत्तीस (32) वर्षप्रमाण और चौसठ (64) वर्षप्रमाण है ॥384॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (70-72)

70) उस ही समय आरोहक के संज्वलन-4 का स्थिति-बंध संख्यात गुणा है । (32 वर्ष)

71) अवरोहक के पुरुषवेद का जघन्य स्थिति-बंध उतना ही है । (32 वर्ष)

72) उस ही समय अवरोहक के संज्वलन-4 का स्थिति-बंध संख्यात गुणा है । (64 वर्ष)

www.jainkosh.org

चडपडणमोहपढमं, चरिमं तु तहा तिघादघादीणं ।
संखेज्जवस्सबंधो, संखेज्जगुणक्कमो छण्हं ॥385॥

- अन्वयार्थ - (चडपडणमोहपढमं चरिमं संखेज्जवस्सबंधो) चढ़ने वाले के मोहनीय का संख्यात वर्षप्रमाण प्रथम स्थिति-बंध, उतरने वाले के मोहनीय का संख्यात वर्षप्रमाण अंतिम स्थिति-बंध
- (तहा) उसी प्रकार (तिघादघादीणं संखेज्जवस्सबंधो) तीन घातियों का चढ़ने वाले का प्रथम और उतरने वाले का अंतिम संख्यात वर्ष प्रमाण स्थिति-बंध,
- उतना ही चढ़ने वाले का अघातियों का संख्यात वर्षप्रमाण प्रथम स्थिति-बंध और उतरने वाले का अंतिम स्थिति-बंध
- (छण्हं) ये छह स्थान (संखेज्जगुणक्कमो) क्रम से संख्यातगुणित हैं ॥385॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (73-74)

73) आरोहक के मोहनीय का संख्यात वर्ष स्थिति वाला प्रथम स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

- यह अंतरकरण की निष्पत्ति के पश्चात् होता है ।

74) इससे अवरोहक के मोहनीय का संख्यात वर्ष स्थिति वाला अंतिम स्थिति-बंध संख्यात गुणा होता है ।

विशेष: आरोहक के स्थिति-बंध से अवरोहक का स्थिति-बंध जैसे अभी तक दुगुणा-दुगुणा होता था, अब वह यहाँ दुगुणा नहीं है; यथायोग्य संख्यात गुणा होता है ।

अल्प-बहुत्व (75-78)

75) इससे आरोहक के 3 घातिया कर्मों का संख्यात वर्ष स्थिति वाला प्रथम स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

- यह स्त्रीवेद उपशमन काल में होता है ।

76) इससे अवरोहक के 3 घातिया कर्मों का संख्यात वर्ष स्थिति वाला अंतिम स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

77) इससे आरोहक के 3 अघाति कर्मों का संख्यात वर्ष प्रमाण स्थिति वाला प्रथम स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

- यह 7 नोकषाय के उपशमन काल के अंतर्गत होता है ।

78) इससे अवरोहक के 3 अघाति कर्मों का संख्यात वर्ष प्रमाण स्थिति वाला अंतिम स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

चउपडणमोहचरिमं, पढमं तु तहा तिघादघादीणं ।
असंखेज्जवस्सबंधोऽसंखेज्जगुणक्कमो छण्हं ॥386॥

- अन्वयार्थ- (चउपडणमोहचरिमं पढमं) चढ़ने वाले का मोहनीय का अंतिम, उतरने वाले का मोहनीय का प्रथम
- (तहा) उसीप्रकार (तिघादघादीणं) चढ़ने वाले का तीन घातियों का अंतिम, उतरने वाले का प्रथम,
- चढ़ने वाले का तीन अघातियों का अंतिम और गिरने वाले का प्रथम (असंखेज्जवस्सबंधो) असंख्यात वर्षों का स्थिति-बंध
- (छण्हं) ये छह पद (असंखेज्जगुणक्कमो) क्रम से असंख्यात गुणित हैं ॥386॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (79-82)

79) इससे आरोहक का मोहनीय का असंख्यात वर्ष स्थिति वाला अंतिम स्थिति-बंध असंख्यात गुणा है ।

- यह अंतरकरण की निष्पत्ति के काल में पाया जाता है ।

80) इससे अवरोहक का मोहनीय का असंख्यात वर्ष स्थिति वाला प्रथम स्थिति-बंध असंख्यात गुणा है ।

81) इससे आरोहक का 3 घाति कर्मों का असंख्यात वर्ष स्थिति वाला अंतिम स्थिति-बंध असंख्यात गुणा है ।

- यह स्त्रीवेद उपशमन काल में होता है ।

82) इससे अवरोहक का 3 घाति कर्मों का असंख्यात वर्ष स्थिति वाला प्रथम स्थिति-बंध असंख्यात गुणा है ।

अल्प-बहुत्व (83-84)

83) इससे आरोहक का 3 अघाति कर्मों का असंख्यात वर्ष स्थिति वाला अंतिम स्थिति-बंध असंख्यात गुणा है ।

- यह 7 नोकषाय के उपशमन काल में होता है ।

84) इससे अवरोहक के 3 अघाति कर्मों का असंख्यात वर्ष स्थिति वाला प्रथम स्थिति-बंध असंख्यात गुणा है ।

ये सभी स्थिति-बंध (क्रमांक 79 से 84) पल्य/असंख्यात प्रमाण हैं ।

चडणे णामदुगाणं, पढमो पलिदोवमस्स संखेज्जो ।
भागो ठिदिस्स बंधो, हेट्ठिल्लादो असंखगुणो ॥387॥

- अन्वयार्थ - (चडणे) चढ़ते समय (णामदुगाणं) नाम और गोत्र का (पलिदोवमस्स संखेज्जो भागो पढमो ठिदिस्स बंधो) पल्योपम का संख्यातवाँ भागमात्र प्रथम स्थिति-बंध (हेट्ठिल्लादो) नीचे के अर्थात् पूर्व स्थान से (असंखगुणो) असंख्यातगुणित है ॥387॥

www.JainKosh.org

तीसियचउण्ह पढमो, पलिदोवमसंखभागठिदिबंधो ।
मोहस्स वि दोण्णि पदा, विसेसअहियक्कमा होंति ॥388॥

- अन्वयार्थ- (तीसियचउण्ह) तीसिय चतुष्क का (ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय और वेदनीय का) (पढमो पलिदोवमसंखभागठिदिबंधो) पल्योपम का संख्यातवाँ भागमात्र प्रथम स्थितिबन्ध और (मोहस्स वि) मोहनीय का भी पल्योपम का संख्यातवाँ भागमात्र प्रथम स्थितिबन्ध (दोण्णि पदा) ये दोनों पद (विसेस अहियक्कमा होंति) क्रम से विशेष अधिक हैं ॥388॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (85-87)

85) इससे आरोहक का नाम-गोत्र का पल्य/संख्यात भाग प्रमाण प्रथम स्थिति-बंध असंख्यात गुणा है ।

86) इससे आरोहक का ही 3 घातिया का पल्य/संख्यात भाग प्रमाण प्रथम स्थिति-बंध विशेष अधिक है ।

87) इससे आरोहक का ही मोहनीय का पल्य/संख्यात भाग प्रमाण प्रथम स्थिति-बंध विशेष अधिक है ।

www.JainKosh.org

ठिदिखंडयं तु चरिमं, बंधोसरणट्ठिदी य पल्लद्धं ।
पल्लं चडपडबादर-पढमो चरिमो य ठिदिबंधो ॥389॥

- अन्वयार्थ - (चरिमं ठिदिखंडयं) उससे अंतिम स्थितिकाण्डक आयाम, उससे (पल्लद्धं य बंधोसरणट्ठिदी) पल्यप्रमाण स्थितिबन्ध करने के लिए हुई बंधापसरणरूप स्थिति
- (पल्लं) उससे पल्य, उससे (चडपडबादरपढमो चरिमो य ठिदिबंधो) चढ़ने वाले का बादर लोभ का अनिवृत्तिकरण के प्रथम समय का स्थिति-बंध, उतरने वाले के अनिवृत्तिकरण के अंतिम समय का स्थिति-बंध – ये पाँच पद क्रम से संख्यातगुणे हैं ('संख्यातगुणा' – गाथा 390 से लेना है) ॥389॥

www.JainKosh.org

88) इससे सभी कर्मों का पल्य/संख्यात भाग प्रमाण अंतिम स्थितिकांडकायाम संख्यात गुणा है ।

अ) ज्ञानावरणादि 6 कर्मों का यह आयाम सूक्ष्म-सांपराय के अंतिम कांडकघात में प्राप्त होता है ।

ब) मोहनीय का यह आयाम अंतरकरण के काल में होने वाले कांडकघात में प्राप्त होता है ।

89) इससे पल्य प्रमाण स्थिति-बंध करने के लिये जो पल्य/संख्यात भाग प्रमाण अंतिम बंधापसरण किया जाता है, वह संख्यात गुणा है ।

90) इससे पल्य संख्यात गुणा है ।

91) इससे आरोहक के अनिवृत्तिकरण के प्रथम समय में स्थिति-बंध संख्यात गुणा है । (लक्षपृथक्त्व सागर प्रमाण)

92) इससे अवरोहक के अनिवृत्तिकरण का अंतिम स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

चडपडअपुव्वपढमो, चरिमो ठिदिबंधओ य पडणस्स ।
तच्चरिमं ठिदिसत्तं, संखेज्जगुणक्कमा अट्ठ ॥390॥

- अन्वयार्थ- उससे (चडपड अपुव्वपढमो चरिमो ठिदिबंधओ) चढ़ने वाले के अपूर्वकरण के प्रथम समय का स्थिति-बंध, उससे गिरने वाले के अपूर्वकरण के अंतिम समय का स्थिति-बंध,
- उससे (पडणस्स तच्चरिमं ठिदिसत्तं) गिरने वाले के अपूर्वकरण के अंतिम समय का स्थिति-सत्त्व संख्यातगुणा है ।
- (अट्ठ) पूर्वोक्त 88 से 95 तक आठ पद (संखेज्जगुणक्कमा) क्रम से संख्यातगुणित हैं ॥390॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (93-95)

93) इससे आरोहक के अपूर्वकरण का प्रथम स्थिति-बंध संख्यात गुणा है । (अंत:कोटाकोटी सागर प्रमाण)

94) इससे अवरोहक के अपूर्वकरण का अंतिम स्थिति-बंध संख्यात गुणा है ।

95) इससे अवरोहक के अपूर्वकरण के चरम समय में स्थिति-सत्त्व संख्यात गुणा है ।

ये पूर्वोक्त 8 पद (88 से 95) संख्यात गुणा हैं ।

www.JainKosh.org

तप्पढमट्ठिदिसत्तं, पडिवडअणियट्टिचरिमठिदिसत्तं ।
अहियकमा चडबादर-पढमट्ठिदिसत्तयं तु संखगुणं ॥391॥

- अन्वयार्थ- उससे (तप्पढमट्ठिदिसत्तं) गिरनेवाले के अपूर्वकरण के प्रथम समय का स्थिति-सत्त्व और उससे (पडिवड अणियट्टिचरिमठिदिसत्तं) गिरने वाले के अनिवृत्तिकरण के अंतिम समय का स्थिति-सत्त्व (अहियकमा) क्रम से अधिक है।
- उससे (चडबादरपढमट्ठिदिसत्तयं तु संखगुणं) चढ़ने वाले के अनिवृत्तिकरण के प्रथम समय का स्थिति-सत्त्व संख्यातगुणा है ॥391॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (96-98)

96) इससे अवरोहक के अपूर्वकरण के प्रथम समय में स्थिति-सत्त्व विशेष अधिक है ।

- अधिक का प्रमाण (अपूर्वकरण का काल – 1) प्रमाण है क्योंकि अध:स्थिति गलन से ही अवरोहक के स्थिति-सत्त्व घटता है, कांडकघात से नहीं ।

97) इससे अवरोहक के अनिवृत्तिकरण के अंतिम समय में स्थिति-सत्त्व विशेष अधिक है ।

- यह एक स्थिति मात्र से अधिक है क्योंकि एक समय पूर्व का ही सत्त्व ग्रहण किया है ।

98) इससे आरोहक के अनिवृत्तिकरण के प्रथम समय में स्थिति-सत्त्व संख्यात गुणा है ।

www.JainKosh.org

प्रश्न: चढ़ते समय संख्यात गुणा सत्त्व कैसे संभव है ?

उत्तर: क्योंकि इस सत्त्व का अभी और भी कांडकघात होना है । अत: अवरोहक के सत्त्व से आरोहक का यह सत्त्व संख्यात गुणा है ।

www.JainKosh.org

चडमाणअपुव्वस्स य, चरिमट्ठिदिसत्तयं विसेसहियं ।
तस्सेव य पढमट्ठिदि-सत्तं संखेज्जसंगुणियं ॥392॥

- अन्वयार्थ- (चडमाणअपुव्वस्स य चरिमट्ठिदिसत्तयं विसेसहियं) उससे चढ़ने वाले के अपूर्वकरण के अंतिम समय का स्थिति-सत्त्व विशेष अधिक है।
- उससे (तस्सेव य पढमट्ठिदिसत्तं संखेज्जसंगुणियं) उसके ही प्रथम समय का स्थिति-सत्त्व संख्यातगुणित है ॥392॥

www.JainKosh.org

अल्प-बहुत्व (99-100)

99) आरोहक के अपूर्वकरण के अंत में स्थिति-सत्त्व विशेष अधिक है ।

- क्योंकि यह चरम कांडक के पल्य/संख्यात प्रमाण आयाम से अधिक है ।

100) इससे आरोहक का ही अपूर्वकरण के प्रथम समय में स्थिति-सत्त्व संख्यात गुणा है ।

- क्योंकि अपूर्वकरण में होने वाले संख्यात हजार कांडकों के द्वारा संख्यात बहुभाग स्थिति घाती जाती है । तब अंत में संख्यात गुणाहीन स्थिति शेष रहती है । इसलिये अंतिम सत्त्व से प्रथम सत्त्व संख्यात गुणा पाया जाता है ।

www.JainKosh.org

प्रणमामि महावीरं, सर्वशांतिकरं जिनम् ।
प्रशांतदुरितानीकं, शांतये सर्वकर्मणाम् ॥

- अन्वयार्थ - (प्रशांतदुरितानीकं) पापरूपी सेना का नाश करने वाले
- (सर्वशांतिकरं) सर्व शांति करने वाले
- (महावीरं) महावीर (जिनं) जिनवर को
- (सर्वकर्मणां शांतये) सभी कर्मों का नाश करने के लिए
- (प्रणमामि) मैं नमस्कार करता हूँ।
- एवं चारित्रमोहोपशमनविधानं समाप्तम्।

www.JainKosh.org

- Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)
- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889

- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।